Item Code: 641 തിയ്യതി 17/1 Participant Code: 042

विषय : तो मैं क्या करू।

उठती सवाल : 'तो मैं क्या करूँ।'

पता नहीं क्यों,
रात की सन्नाटे में
बहुत सारे आवाज़े
मुझे उनींद बनाई।
बेचैन होकर उठी मैं,
वे आवाज़े मेरी करीब आए।
वे बात करने लगे।

* * * * *

"मैं - प्रकृति हूँ,
मेरी बच्चे हैं हो तुम लोग।
मगर क्या,
क्या तुम मुझे माँ मानती हो ?
है - घमंड से भरे मानव,
तुमने मेरी शोषण की,
छीन लिया मेरी हरियाली,
काट दिया पेडों को,
मार दिया जीवजंतुओं को

Item Code: 641

Participant Code: 042

ज़हरीली बना दिया:
मेरी हवा को ...
मैं रोती हूँ, रोज़
दर्द से, दुखी होकर
परंतु, तुम्हारी लालच का तो
कोई सीमा नहीं
सब दिया है मैंने,
पानी, हवा, खाना, शीतलता-
सब कुछ।
लेकिन बदले में तुम -
दर्द : सिर्फ दर्द
ख्वाईश थे, बहुत सारे-
मगर टूट चुके हैं सब।
जब भी मैं रोती हूँ,
बाढ़ (प्रलय) आते हैं
और आँसू सूखते,
तब सूख भी
है मानव -
जो खुद को
मेरी हकेदार कहते हो,

मैं मौत की ओर-
जा रही हूँ -
'तो मैं क्या करूँ ?'
ये सिर्फ मेरी नहीं,
बल्कि तुम सबका,
ज़िंदगी का सवाल है।

हो मेरे बच्चे -
इस माँ का-कुछ तो
परवाह करो !
बेहरे होने का नाटक मत करो,
बचाओ, मुझे,
साथ में तुम सब को भी।

ये माँ ने हमेशा
माफ़ किया है,
यह आज भी माफ़ करूँगी।
मुझे संभालो,
पेड़ लगाकर, प्रदूषण कम करके,
हरियाली को वापस लाओ,

Item Code: 641 തിയ്യതി 17/1 Participant Code: 042

मेरी सपना पूरी करो।
आओ, एकता से,
खुशी से, शिष्टता से
जीत है।
इस माँ का ममता
हमेशा तुम्हारी साथ है
उम्मीद है,
तुम्हारी मदद की ...."

मैं हैरान हो गई,
'प्रकृति माँ, अब भी
हमारा ख्याल रखते हैं।
उसकी संरक्षण का
ज़िम्मेदारी हम निभाएँगे।

* * * *

दूसरी आवाज़ - कमज़ोर थे,
वह मेरी कानों में
फुसफुसाई।

"मैं लड़की हूँ।

न - खिलौना शब्द ही
उचित है
क्योंकि : तुम खेलते हो,
मेरी अभिमान से।
मैं वही लड़की हूँ,
जिसे इतिहास ने
नाकाबिल दिखाया है।

मैं सीता हूँ-
जिसे अपवित्र समझकर
पूरे देश ने ताने दिए।
मैं द्रौपदी भी हूँ
जो अपने मर्दों के
मौजूदगी में भी
आत्माभिमान खोने वाली थी।
और मैं उन सब
लड़कियों का प्रतीक हो
जो सन्नाटे में अपना
ज़िंदगी बिताते हैं,
जिसे समाज ने

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി തിയ്യതി 17/1

आज भी बोझ मानते हो।
हज़ारों सालों से
इंसान बदल गए,
मगर फ़िक्र नहीं बदले।
चारों ओर गुंजते हैं,
'नः स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति'
थक चुकी हूँ
ऐसी दुनिया में जीकर।
बताओ 'तो मैं क्या करूँ,...
क्या करूँ मैं?'"
मेरी आँखों से आँसू के बूंदें
बह गई।
रगों की लहू गरम हो गई...
~~क्रोध~~ क्रोध से मैं चिल्लाई -
'लड़की होने पर गर्व करो
तुम बोझ नहीं, शीर्ष हो,
अपने घर का,
इस दुनिया का।
अगर तुम नहीं तो
कुछ भी नहीं

Item Code: 641 Participant Code: 042

आवाज़ उठाओ,
खुद की इज्ज़त करो,
और ~~नि~~ जो हाथ,
पवित्रता छीनते हैं,
उसे अपनी
मशाल की एक चिंगारी
से खत्म करो,
तोड़ दो वे पुराने
विश्वास,
और ऐसी आग बनो
जिसे पानी या हवा
बुझा नहीं सकते।
वह आवाज़ अब कमज़ोर नहीं,
ताकतवर हो चुके थे।
आज वही आवाज़,
दुनिया को राह दिखाते हैं।

* * * *

"मैं आरावली हूँ,
भारत की छाती पर
रहती हूँ।

खुश थी। अब नहीं,
तुम मानव ने
मुझसे मेरी सब लूटे,
मेरी पहचान, मेरी आत्मा।
ये मत भूलो कि
मैं ही तुम्हें बारिश दी देती हूँ।
मैं ही सूखी हवा से बचाती हूँ।
मैं ही तुम्हारा संरक्षण करती हूँ।

मुझसे मेरी रेत, पेड़
और पत्थर मत चुराओ।
कुछ तो बाकी रखो,
आनेवाले पीढ़ियों के लिए।
बहुत देखा है,
तजुर्बा भी है,
मेरी संरक्षण - तुम्हारी
उत्तरदायित्व है -
मेरी हालत तो देखो
'तो मैं क्या करूँ'?
मेरी नाश तुम्हारी भी नाश है।

तुम्हारी ज़िंदगी में
मेरी भूमिका याद करो
और छोड़ दो,
ये ~~व~~ व्यवहार -
जो भी करो जल्दी करो
वर्ना सालों बाद
तुम - मानव
पछताओगे कि
'हे, भगवान,
अब हम क्या करें'...''

* * * *

मैं ~~समय~~ समझ गई कि
'अब हमें ही कुछ करना चाहिए,
सही वक्त पर, अभी ...

~~ समाप्त ~~